

# कलमा शहादत का अर्थ

معنى

شهادة أن لا إله إلا الله

الشيخ عبد الكريم الديوان

ترجمة أعتيق الرحمن الأثري



The Cooperative Office For Call & Guidance to Communities at Naseem Area  
Riyadh - Al-Manar Area / Front of O.P.D. of Al-Yamamah Hospital  
Under the Supervision of Ministry of Islamic Affairs and Endowment and  
Call and Guidance - Riyadh - Naseem  
Tel. & Fax 01-2328226 - P.O. Box 51584 - Riyadh - 11553

الهندية

٣١

تم بعون الله وتوفيقه ترجمة وأصدار هذا الكتاب  
بالمكتب التعاوني للدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات  
بحي الروضة

تحت اشراف وزارة الشؤون الإسلامية والأوقاف  
والدعوة والإرشاد

الرياض ١١٦٤٢ هـ ص.ب ٨٧٢٩٩  
هاتف ٤٩١٨٠٥١ فاكس ٤٩٧٠٥٦١

يسمح بطبع هذا الكتاب واصدارتنا الأخرى بشرط  
عدم التصرف في أي شيء ما عدا الغلاف الخارجي .

**حقوق الطبع ميسره لكل مسلم**

٣) المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد (الروضة) ، ١٤١٧هـ

فهرسة مكتبة الملك فهد الوطنية أثناء النشر

الديوان ، عبد الكريم

معنى لا إله إلا الله/ ترجمة عتيق الرحمن الأثري - الرياض .

٣٢ ص ؛ ١٢ × ١٧ سم

ردمك ١ - ٥ - ٩١٢٠ - ٩٩٦٠

(النص باللغة الهندية)

١ . التوحيد

٢ . الشهادة (أركان الإسلام)

أ. الأثري ، عتيق الرحمن (مترجم) ب . العنوان

١٧/١٥٣٢

ديوي ٢٤٠

رقم الايداع : ١٧/١٥٣٢

ردمك: ١ - ٥ - ٩١٢٠ - ٩٩٦٠

**معنى شهادة أن لا اله الا الله**

**(المندبة)**

# **कलमाशहादतकाअर्थ**

**الشيخ عبد الكريم الديوان**

( امام و خطيب ، جامع الزبير بن العوام ، حي النهضة )

**ترجمة : عتيق الرحمن الأثري**

**ناشر المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات، حي النخلة، الرياض**

## راجع النص العربي

فضيلة الشيخ // عبد الله بن عبد الرحمن الجبرين

الحمد لله وحده

وبعد فقد اطلعت على هذه الأوراق في معنى لانه لا الله وشروطها وما تستلزمه

وهي صحيحة موافقة للأدلة ولتفسير العلماء لمعتبرين

قاله وكتبه عبد الله بن عبد الرحمن الجبرين عضو لائحة بوزارة دار الفبحوث العلمية والأفتاء .

وصلى الله على محمد وآله وصحبه وسلم

المبدل وسره  
وربعه فوتر الجبرين  
وعلى عيسى بن عبد الله بن عبد الرحمن الجبرين  
المعروف عنه في دار الفبحوث العلمية والأفتاء .

## कलमा का अर्थ

समस्त मुसलमानों का इस पर इतिफाक है कि इसलाम धर्म की जड़ तथा मखलूक पर लागू होने वाली सर्वप्रथम कर्तव्य इस बात की गवाही देना है कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं, और मुहम्मद स० अल्लाह के रसूल (दूत) हैं।

इसी कलमा को पढ़कर काफिर मुसलमान बनता है, एवं इसलाम का कट्टर शत्रु अपने धर्म से भी पारिवर्तन लाता है कि उसकी दुश्मनी के में बदल जाता है, और धन, प्राणि को मृत्यु का अधिकार मिल जाता है, अतः एक काफिर जितना तक अपनी ज़बान से यह कलमा नहीं पढ़ेगा वह मुसलमान नहीं कहलायेगा, क्योंकि यही इसलाम धर्म की कुंजी तथा प्रथम स्तंभ है।

जैसा कि निम्नि हदीस से यह बात पूर्ण रूप से स्पष्ट है :

इसलाम की बुनियाद पाँच स्तंभों पर स्थापित है, प्रथम इस बात की गवाही देना कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं, तथा मुहम्मद स० अल्लाह के रसूल (दूत) हैं, (बुरखारी, मुसलिम)

« بني الإسلام على خمس شهادة أن لا إله إلا الله وأن محمدًا رسول الله »  
(أخرجه الشيخان)

**शक्ति के बावजूद कलमा न पढ़ना**  
इसलाम धर्म के महान विद्वान इमाम इब्न तैमिया रहि० का कथन है कि जो मनुष्य शक्ति रखते हुये कलमा नहीं पढ़ेगा वह सारे मुलमानों के दृष्टि में काफिर है, यदि वह किसी उचित कारण से विवश है तो उस की हालत के अनुसार उस पर हुक्म लागू होगा-

## लाइलाह इल्लल्लाह का अर्थ

कलमा लाइलाह इल्लल्लाह एक ऐसी वाक्य है जिसमें निषेध एवं इकरार दो चीजें पाई जाती हैं. इसके प्रथम भाग लाइलाह में निषेध है तथा द्वितीय भाग इल्लल्लाह में इकरार है, तो इस प्रकार इस का अर्थ यह हुआ कि ईश्वर के इलावा कोई भी सत्यतः उपासना योग्य नहीं.

कुछ मूर्खजनों का विचार है कि कलमा लाइलाह इल्लल्लाह का अर्थ केवल यह है कि इसे जुबान से पढ़ लिया जाये, या अल्लाह के वजूद को मान लिया जाये, या संसार की समस्त चीजों पर बिना किसी भागीदारी के उसकी शासन को कबूल कर लिया जाये. किन्तु यह विचार व्यार्थ और निन्दनीय है.



क्योंकि अगर कलमा का अर्थ यह होता तो अहले किताब (यहूदी, ईसाई) तथा बुत और मूर्तियों के पूजा करने वालों की तौहीद (एकेश्वरवाद) की ओर निमंत्रण देने की ज़रूरत और अवश्यता ही क्या थी जबकि यह लोग भी इतनी बातों पर विश्वास रखते थे।

## संदेह तथा उत्तर

कुछ लोग यह शंका करते हैं कि कल्मह लाइलाहा इल्लाह का उपरोक्त अर्थ कैसे दुरुस्त और सही हो सकता है जबकि अल्लाह के अतिरिक्त बहुत सारी वस्तुएँ हैं जिन की पूजा की जाती है, और स्वयं ईश्वर ने पवित्र क़ुरआन में इन के लिये 'आलिहा' अर्थात् ईश्वरों का शब्द प्रयोग किया है, जैसा कि अल्लाह पाक क़ुरआन में इरशाद फरमाता है:

فما أغنت عنهم آلهم  
 التي يدعون من دون  
 जब तुम्हारे ख का अज़ाब  
 आगया तो इनके वह  
 उपास्य कुछ काम न आये  
 जिन को यह अल्लाह के  
 अतिरिक्त पुकारते थे - सूरह हूद: (१०१)

तो इस संदेह का उत्तर यह है कि यह  
 उपास्य असत्य और निन्दनीय हैं, यह किसी भी  
 प्रकार उपासना योग्य नहीं हैं, और इस का  
 प्रमाण पवित्र क़ुरआन की निम्न शुभ आयत है  
 यह इसलिये कि अल्लाह  
 ही सत्य है और उस के  
 अतिरिक्त समस्त चीज़ें  
 जिनको वह पूजते हैं ग़लत  
 हैं और अल्लाह बुलन्द तथा  
 बड़ा है बाली है - सूरह हज़: (६२)

इस वार्ता से यह बात निखर कर सामने आ गई कि कलमा तौहीद का शुद्ध अर्थ यह है कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य उपास्य नहीं, और इसी का नाम तौहीद है, और उपरोक्त संदेह व्यर्थ संव गलत है-

उपासनाओं की स्वीकारता  
तथा शुद्धता कलमा शहादत  
पर आधारित है-

मनुष्य का कोई कार्य अथवा उपासना अल्लाह के निकट उस समय तक स्वीकारनीय नहीं है जब तक कि वह तौहीद (इकेश्वरवाद) को न अपना ले, अर्थात् वह इस बात की गवाही दे कि अल्लाह के सिवा कोई पूजनीय नहीं- यदि वह इकेश्वरवाद से दूर है तो उसकी सारी उपासनाएँ नष्ट और बेकार होंगी-

क्योंकि शिर्क जो एकेश्वरवाद का विलोम है इसके संघ में कोई इबादत (उपासना)

लाभदायक नहीं, चुनांचि अल्लाह पवित्र

कुंआन में इरशाद फरमाता है:

अल्लाह के साथ भागीदार ما كان للمشركين أن

बनाने वालों का यह काम يعمروا مساجد الله

नहीं कि वह मसजिदों को شاهدين على أنفسهم

बसायें जबकि यह अपने بالكفر أولئك حبطت

ऊपर कुफ्र के गवाह हैं أعمالهم وفي النار هم

इनकी उपासनाएँ अकारत خالدون - توبة: 17

हैं और इन्हें सदैव जहन्नम

(नरक) में रहना है - (सूरह तौबा: १६)

कलमा शहादत की दुरुस्तगी के

लिये निम्न चीजें अनिवार्य हैं

यहां पर एक प्रश्न उत्पन्न होता है कि क्या

केवल जुबान से कलमा पढ़ लेना लाभदेगा या इसके लिये अन्य चीजों की भी जरूरत है ? तो इस विषय में कुछ मनुष्यों का विचार है कि केवल कलमा पढ़ लेना काफी है और किसी चीज की आवश्यकता नहीं है, किन्तु यह सोच गलत और उनकी ग़ुलामी का दृढ़ प्रमाड़ है, क्योंकि कलमा शहादत केवल एक वाक्य नहीं जिसको जुबान से कह लिया जाये बल्कि इसका एक महत्वपूर्ण अर्थ है जिसका पाया जाना भी अति अनिवार्य है-

इसलिये कोई व्यक्ति वास्तविक मुसलिम उस समय तक नहीं होगा जब तक कि वह अपने आँखों, कर्णों से शरीक कर के अपना प्रत्येक कार्य इसके आनुसार न करे लगे और इसके विपरीत तमाम कामों से दूर रहे-

यदि किसी मनुष्य ने कलमा पढ़ लिया मगर उसके अर्थ का उसे ज्ञान नहीं और न उस के कार्य इसके अनुकूल हैं तो उसका कलमा पढ़ना किसी भी प्रकार लाभदायक नहीं, इस आधार पर कलमा शहादत की दुरुस्तगी के लिये निम्नलिखित छ-चीजें अनिवार्य हैं-

१- सारी उपासनाएँ केवल अल्लाह के लिये की जायें, अर्थात् मनुष्य की नमाज़, रोजा, दुआ, फरयाद, नज़र, मन्नत, भेंट, कुर्बानी और शेष उपासनाएँ केवल अल्लाह के लिये हैं, इसका एक मामूली भाग भी अल्लाह के अतिरिक्त किसी मूर्ति के लिये कदापि न हो चाहे वह कितने ही ऊँचे पद पर क्यों न हो, यदि कोई व्यक्ति ने ऐसा किया तो उसकी ग़वही नकार होजायेगी और वह शर्क़-शरबाद के मार्ग से हट

कर अल्लाह के साथ भागीदार बनाने वाला हो जायेगा, चुनांचे अल्लाह पवित्र कुआन पाक में इरशाद फरमाता है:

और तुम्हारे रब आदेश दिया وقضى بكم أن لا  
कि तुम लोग केवल उसी की تعبدوا إلا إياه  
उपासना करो. इसरा: २३ الاسراء: २३

और यही लाइलाहा इल्लल्लाह का अर्थ है -  
और सम्पूर्ण आलिमों का इस बात पर इतिफाक है कि जो मनुष्य कलमा पढ़ने के बावजूद अल्लाह के साथ भागीदार बनाता है वह काफिर है, उस से युद्ध की जायेगी यहाँ तक कि वह शिर्क को छोड़कर तौहीद (एकेश्वरवाद) के मार्ग पर कायम हो जाये -

२- अल्लाह और रसूल (दूत) की सूचना दी हुई समस्त बातों पर पूर्ण विश्वास रखना ,

अर्थात् किसी व्यक्ति का कलमा शहादत पढ़ना उस समय तक सिद्ध नहीं होगा जब तक कि वह स्वर्ग, नरक, आसमानी पुस्तकों, रसूलों, अन्तिम दिन और अच्छी बुरी तबदील के सम्बंध में अपना विश्वास दृढ़ न कर ले-

३- अल्लाह के अतिरिक्त जिन जिन वस्तुओं अथवा व्यक्तियों की पूजा की जाती है उन की भक्ति तथा उपासना का इन्कार करना जैसा कि मुसलिम शरीफ की हदीस है कि प्यारे नबी स० ने फरमाया है :

जिस व्यक्ति ने कलमा من قال لا اله الا الله  
 लाइलाहा इल्लल्लाह وكفر بما يعبد من دونه  
 पढ़ा तथा उन तमाम الله حرم ماله ودمه  
 चीजों का इन्कार किया وحسابه على الله  
 जिनकी अल्लाह के अतिरिक्त أخرجه مسلم



पूजा की जाती है तो उसका धन संवरकित  
सुरक्षित हो गये, और उसका हिसाब किताब  
अल्लाह के समर्पित है-

इस हदीस में प्यारे नबी स० ने धन संव  
रकित की रक्षा की दो चीजों पर आधारित  
किया है, पहली चीज कलमा लाइलाहा इल  
अल्लाह का पढ़ना, और दूसरी चीज यह  
कि अल्लाह के अतिरिक्त तमाम चीजों की  
उपासना का इनकार करना, इसलिये वही  
व्यक्ति वास्तविक मुसलमान है जो अल्लाह  
के साथ भागीदार बनाने वालों से पूर्ण रूप से  
बाईकाट करके उनकी उपासनाओं का निषेध  
करे, जिस प्रकार हजरत इब्राहीम अलै० न्ने  
नुरसिदीन संव उनकी उपासनाओं से बिल्कुल  
अलग थलग होकर स्पष्ट शब्दों में कहा था

إني براء مما تعبدون  
 मेरा तुम्हारे उपास्यों  
 إلا الذي فطرنى.  
 से कोई सम्बंध नहीं  
 الزخرف: १७, १८ -  
 मेरा सम्बंध केवल उस

हस्ती से है जिसने मुझे जन्म दिया है -  
 और इसी अर्थ का उल्लेख निम्न आयत में  
 भी हुआ है :

فمن يكفر بالطاغوت  
 जिसने तागूत का इनकार  
 ويؤمن بالله فقد  
 किया तथा केवल अल्लाह  
 استمسك بالعروة الوثقى  
 पर विश्वास रखा तो उस  
 البقرة: १०७ -  
 ने दृढ़ सहारा ग्रहण लिया -

आयत में मजबूत सहारा से मुराद इस्लाम  
 धर्म है, और "तागूत" के इनकार से मुराद  
 उन तमाम चीजों की उपासना का इनकार का  
 जो उससे दूर रहना है - जिनकी अल्लाह के  
 अतिरिक्त पूजा की जाती है - और "तागूत" से

मुराद वह तमाम चीजें हैं जिनकी अल्लाह के  
 अतिरिक्त उपासना की जाती है- किन्तु अल्लाह  
 के प्रमशानी, बुजुर्गाने दीन, तथा फौख्तों  
 के तागत नहीं कहा जायेगा क्योंकि यह लोग  
 इस बात से कदापि प्रसन्न न थे कि इन की  
 उपासना का जाये, बल्कि ऐसा शैतान के बहकाने  
 से हुआ-

४- कलमा लाइलाहा इल्लल्लाह के अनुसार  
 अल्लाह तथा रसूल के आदेशों का पालन करना  
 जैसे कि पवित्र कुरआन में अल्लाह फरमाता है  
 यदि वह तौबा कर के فَاِنْ تَابُوا وَاَقَامُوا  
 नमाज़ पढ़ने लगे और ज़कात الصَّلَاةَ وَاَتَوْا الزَّكَاةَ  
 देने लगे तो उनका रास्ता فَخَلَوْا سَبِيلَهُمْ  
 सही हो- तौबा: ५ التَّوْبَةُ: ٥

और इसी बात का उल्लेख कुछ अधिक स्पष्ट

रूप से निम्न हदोस में भी हुआ है - जैसा कि  
नबी स० ने इरशाद फरमाया है:

मुझे अल्लाह का आदिश أمرت أن أقاتل الناس  
ह कि लोगों से युद्ध करूँ حتى يشهدوا أن لا  
यहाँ तक कि वह इस बात إله إلا الله وأن محمداً  
की गवाही दें कि अल्लाह رسول الله ويقيموا  
के अतिरिक्त कोई सत्य الصلاة ويؤتوا الزكاة  
उपास्य नहीं तथा मुहम्मद فإذا فعلوا ذلك عصمو  
स० अल्लाह के रसूल है معي دماءهم وأموالهم  
और नमाज़ पढ़ने लगेँ एवं الابحىق الاسلام  
ज़कात देने लगेँ, यदि وحسابهم على الله  
उन्होंने इन कामों को أخرجه الشیخان

कर लिया तो अब उनके धन, प्राणि मेरी ओर  
से सुरक्षित हो गये, मगर उस हालत में नहीं  
जब यह कोई दंडनीय अप्राप्त करें. और

इनका हिसाब अल्लाह को समर्पित है-

(बुरखरी व मुसलिम)

और उपरोक्त आयत का अर्थ यह है कि अगर वे लोग शिर्क शिर्क को छोड़ कर नमाज़ पढ़ने लगे तथा ज़कात देने लगे तो अब उनकी राह को छोड़ दो अर्थात् उनसे छोड़ छाड़ न करो-

शैखुल इस्लाम इमाम इब्ने तैमिया रहि० फरमाते हैं: «जो मनुष्य इसलाम के सिद्ध निस्सन्देह आदेशों और शिक्षाओं से मुंह मीड़ते हैं उनसे युद्ध करना अति अनिवार्य है, यहां तक कि वे इसलाम की शिक्षाओं के पाबन्द हो जायें- चाहे वे कलमा पढ़ने वाले और इसलाम की कुछ बातों पर अमल करने वाले हो क्यों न हों- जिस प्रकार हज़रत अबू बक्र रजि० तथा दूसरे सहाबा रजि०

जुकात न देने वालों से लड़ाई की थी, और फिर इसी निर्णय पर तमाम इमामों व आलिमों का इत्तिफाक हो गया - (तैसीरुल अज्जीजुल हम्मेदे)

५- कलमा शहादत के दुरुस्त होने के लिये अवश्यक है कि कलमा पढ़ने वाले के भीतर निम्नलिखित सात बातें पाई जायें

१- ज्ञान: अर्थात् कलमा पढ़ने वाले को इस बात का पूर्ण ज्ञान हो कि अल्लाह के सिवा कोई उपासना योग्य नहीं.

२- विश्वास: अर्थात् उसका दृढ़ विश्वास हो कि अल्लाह ही सत्य उपास्थ है, इस में उसे कोई शंका एवं सन्देह बिल्कुल नहीं है.

३- इखलास: अर्थात् वह अपनी समस्त उपासना केवल अल्लाह की प्रसन्नता

प्राप्त करने के लिये करे, इसक एक अंश भी किसी व्यक्ति अथवा वस्तु के लिये न हो।

४- सत्यता : अर्थात् वह हृदय की सत्यता के साथ कलमा पढ़े, जो जुबान से कहे वह दिल में हो ऐसा न हो कि जुबान पर कलमा लाइलाहा इल्लल्लाह हो और हृदय में उसका कोई प्रभाव न हो अगर ऐसी बात है तो वह शेष मुनाफिकों के प्रकार गैर मुसलिम और काफिर होगा, उसकी गवाही विफल होगी -

५- ईशप्रेम : अर्थात् वह कलमा पढ़ने के पश्चात् अल्लाह से प्रेम करे, अगर कलमा पढ़ लिया और उसके हृदय में ईशप्रेम न हो तो ऐसा व्यक्ति काफिर ही

होगा, उसे मुसलमान नहीं कहा जायेगा -

६- आज्ञापालन : अर्थात् वह केवल अल्लाह की उपासना करे तथा वह अल्लाह के दीन का पाबन्द हो और इस की सत्यता पर उसे पूर्ण विश्वास हो, जो मनुष्य इससे मुंह मीड़ेगा वह इबलीस और उसके चेलों की तरह काफिर होगा -

७- स्वीकारता : अर्थात् वह कलमा शहादत के अर्थ को इस प्रकार स्वीकार करे कि अपनी सारी उपासनाएँ अल्लाह की समर्पित करे तथा बातिल उपासियों की शक्त समझते हुए उनसे बिलकुल दूर रहे -

८- शहादत की दूसरी शर्त है कि वह भी बहुत अनिवार्य है कि इस के विना तो तमाम कामों से दूर रहा जाये और वह निम्न है :



१- अपने तथा अल्लाह के बीच वास्ते और सिफारशी बनाना. इन की सहायता के लिये पुकारना, इनसे सिफारिश की आज्ञा करना. और इनपर भरोसा करना, यदि किसी ने कलमा पढ़ने के बाद ऐसा किया तो वह निरसंकोच काफिर होगा -

२- मुश्रिकों को काफिर न समझना या उनके काफिर होने में शंका करना अथवा उनके आह्वान की दुरुस्त समझना, ऐसा करने वाला कलमा पढ़ने के बावजूद काफिर होगा.

३- यह आह्वान सुनना कि तू या मैं ही सब के जीवन व्यतीत करने के लिये हैं कि या तू या मैं ही सब के लिये हैं अथवा आप के शासन के लिये हैं किसी और के

तरीका बढ़कर है जैसे तागूती और शैतानी  
शासन को आप की शासन पर बढ़ावा देना-

४- ध्यारे नबी स० की भाई हुई शरीअत  
में से किसी बात से घृणा करना, इस काम  
के करने से मनुष्य इसलाम के दायरे से  
बाहर निकल जाता है चाहे वह उस बात  
पर अमल ही क्यों न करता हो.

५- अल्लाह और रसूल के दीन में से किसी  
चीज का या जजा सजा के नियम का उपहास  
करना, ऐसा करने वाला काफिर है और उस  
की गवाही विफल है -

६ - मुसलमानों के विशिष्ट मुबारिकों को  
सहयोग देना -

७- यह आह्वान रखना कि कुछ विशेष  
लोग हमलाय धर्म के सामने खड़े आदमी

की पाबन्दी से स्वतन्त्र हैं

८- अल्लाह के दीन से मुंह मोड़ना उस  
की शिक्षा प्राप्त करना और न इस पर  
अमल करना-

९- अल्लाह के धर्म में से किसी बात  
को झुटलाना-

१०- अल्लाह और रसूल की ओर से  
जो काम वर्जित हैं उसे जायज एवं हलाल  
समझना, जैसे यह कहना कि ब्याज खाना  
हलाल है या यह कहना कि जिनाकरी  
हलाल है-

हदीसों में टकराव और उत्तर  
बुरखरी संव मुसलिम शरीफ की हदीस  
है कि अल्लाह के रसूल (दूत) स० ने  
इरशाद फरमाया है:-

जिस व्यक्ति ने कलमा पढ़ा ما من عبد قال لا  
 और इसी पर उसकी मृत्यु اله الا الله ثم مات  
 हुई तो वह व्यक्ति जन्नत على ذلك الا دخل  
 (स्वर्ग) में दाखिल होगा - المجنة .

और इसी अर्थ की एक हदीस मुसलिम  
 शरीफ में थी है:-

जिस व्यक्ति ने गवाही दी من شهد ان لا  
 कि अल्लाह के अतिरिक्त اله الا الله وان  
 कोई उपास्य नहीं और محمد عبده ورسوله  
 मुहम्मद स० अल्लाह के حرم الله عليه  
 बन्दे (दास) एवं रसूल है - المسار .  
 तो अल्लाह ने उस पर जहन्नम की आग  
 को हराम कर दिया -

इन दोनों हदीसों और अन्य हदीसों  
 के बीच देखने में टकराव नजर आता है

क्योंकि इनके अर्थ से यह प्रकट होता  
 है कि मनुष्य के जन्मत (स्वर्ग) में प्रवेश  
 करने और जहन्नम (नरक) की आश से  
 बचकर पाने के लिये केवल जुबान से  
 फलमा भाइसाहा इस्लामाह पढ़ लेना  
 काफी है- जबकि दूसरी हदीसों में इस  
 बात का स्पष्ट रूप से उल्लेख है कि  
 जहन्नम (नरक) से हर उस व्यक्ति को  
 निकाला जायेगा जिसके हृदय में जी के  
 दाना के सनापन हैं- यानी- उन  
 के शरीर के उन अंगों के अन्दर की  
 आँच नहीं लगेगी जिनसे वह सजदा करे  
 थे- यह इस बात का दृढ़ प्रमाण है कि कुछ  
 लोग पढ़ने के बावजूद जहन्नम (नरक)  
 में डाले जायेंगे उनका केवल जुबानी

इकरार जहन्नम की आग से बचाव के  
लिये काफी न होगा -

तो इस विषय में सबसे अच्छी बात  
इमाम इब्ने तैमिया रहि० ने कही है जिस  
का खुलासा यह है : « यह हृदी से उन  
लोगों के सम्बन्ध में कही गई है जिन्होंने  
ने दृढ़ विश्वास तथा हृदय की सत्यता  
से कसमा पड़ा और उसी पर उनकी मृत्यु  
हुई अर्थात् वह मरते समय तक इसी  
जमीदा (अडबान) पर ठाम रहे जैसा कि  
किसी दूसरी हृदी से इस का वर्णन  
स्पष्ट रूप से मौजूद है क्योंकि तोहीद  
(एकेश्वरवाद) की हकीकत ही यही है  
कि मनुष्य अपने आप को पूर्ण रूप से  
अल्लाह को समर्पित कर दे -

रहीं वह हृदीसों जौ इस बात को जाहिर  
 करती हैं कि कुछ लोग कलमा पढ़ने के  
 बावजूद जहन्नम में डाले जायेंगे तो यह  
 हृदीसों उन लोगों के सम्बन्ध में हैं जिन्होंने  
 ने देखादेखी या आदत के अनुसार और  
 रसम रिवाज के मुताबिक कलमा पढ़ा  
 परन्तु ईमान (विश्वास) उनके हृदय में  
 नहीं उतरा, या मृत्यु के समय तक वह  
 उस पर कायम नहीं रहे जैसा कि वह तो  
 का यहाँ हाल होता है - चुनाने जौ व्यक्ति  
 ६ ज्ञ की सत्यत तथा दृढ़ विश्वास के साथ  
 कलमा पढ़ेगा और वह किसी पाप एवं  
 अपराध को जान बूझ कर लगातार नहीं  
 करेगा और उसका हृदय ईश्वरप्रेम से भरा  
 होगा, न तो उसके दिल में किसी गलत

काम करने का इरादा पैदा हुआ और न  
ही उसने अल्लाह के किसी आदेश को  
नापसन्द किया तो ऐसा व्यक्ति जहन्नम  
(नरक) की आग पर अवश्य हराम होगा।

इमाम हसन बसरी से पूछा गया कि  
लोग कहते हैं कि लाइलाहा इल्सल्लाह  
का पढ़ने वाला जन्नत में अवश्य दाखिल  
होगा, तो उन्होंने ने उत्तर दिया कि हाँ मगर  
जिसने इस के आधार और तक़ज़ी को  
पूरा किया -

इमाम वहब बिन मुनबिह ने पूछा  
गया कि क्या लाइलाहा इल्सल्लाह  
जन्नत की कुन्जी नहीं है ? तो उत्तर दिया  
क्यों नहीं अवश्य है लेकिन कुन्जी में  
दाँत होते हैं यदि तुम दाँत वाली कुन्जी



भाओगे तो उस से जन्नत का दरवाज़ा  
खलेगा, वरना नहीं -  
وَصَلَّى اللّٰهُ عَلَى نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَحَبِّبِهِ  
اجْمَعِينَ وَسَلَامٌ تَسْلِيمًا كَثِيرًا -

### شعبة الجاليات

(وزارة الشؤون الإسلامية مركز الدعوة بالرياض)

تليفون ١١٦٣٥٦ / ٠١ الرياض ١١١٣١

### المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد بالمدينة

تليفون ٠١ / ٤٣٠١١٢٢ فاكس ٠١ / ٤٣٠١١٢٢

ص.ب. ٢٤٩٣٢ الرياض ١١٤٥٦

### المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد بالطحا

تليفون ٤٠٣٠٢٥١ / ٤٠٣٤٥١٧ / ٠١

فاكس ٠١ / ٤٠٣٠١٤٢

ص.ب. ٢٠٨٢٤ الرياض ١١٤٦٥

### المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد العليا والسليمانية

تليفون ٠١ / ٤٦٢٩٩٤٤

ص.ب. ٦٣٩٤٤ الرياض ١١٥٢٦

### المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد العزيزية

تليفون ٠١ / ٤٩٥٥٥٥٥

ص.ب. ٤٢٣٤٧ الرياض ١١٥٥١

### المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد الدوامي

تليفون ٠١ / ٦٤٢٣٦٣٦

ص.ب. ١٥٩ الدوامي

### المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد بالخرج

تليفون ٠١ / ٥٤٨٠٩٨٣ فاكس ٠١ / ٥٤٨٠٩٨٣

ص.ب. ١٦٨ الخرج ١١٩٤٢

### المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد الربوة

تليفون ٠١ / ٤٩٧٠١٢٦

ص.ب. ٢٩٤٦٥ الرياض ١١٤٥٧

### المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد رياض الخبراء

تليفون ٣٣٤١٧٥٧

ص.ب. ١٦٦ القصيم رياض الخبراء

### المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد بالجمعة

تليفون ٠١ / ٤٣٢٣٩٤٩

ص.ب. ١٠٢ الجمعة ١١٩٥٢

### المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد بالروضة

تليفون ٤٩٧٠٥٦١ فاكس ٤٩٧٠٥٦١

ص.ب. ٨٧٢٩٩ الرياض ١١٦٤٢

### المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد بالنسيم

تليفون ٠١ / ٢٣٢٨٢٢٦

ص.ب. ٥١٥٨٤ الرياض ١١٥٥٣

### المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد بالزلفي

تليفون ٠٦ / ٤٢٢٥٦٥٧ فاكس ٠٦ / ٤٢٢٤٢٣٤

ص.ب. ١٨٢ الزلفي ١١٩٣٢

### مكتب توعية الجاليات بعبدة

تليفون ٠٦ / ٣٦٤٤٥٠٦ ص.ب. ٨٠٨

### مركز توعية الجاليات ببريدة

تليفون ٠٦ / ٣٢٤٨٩٨٠ فاكس ٠٦ / ٣٢٤٥٤١٤

ص.ب. ١٤٢

### مكتب دعوة وتوعية الجاليات بالرس

تليفون ٠٦ / ٣٣٣٣٨٧٠ ص.ب. ٦٥٦

### مكتب توعية الجاليات المذنب

تليفون ٠٦ / ٣٢٠٨١٥ فاكس ٠٦ / ٣٤٢٠٨١٥

القصيم - المذنب - ص.ب. ٤٠٠

### المكتب التعاوني للدعوة وتوعية الجاليات بشقراء

تليفون ٠١ / ٦٢٢٢٠٦١ ص.ب. ٢٤٧

### المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد بالأحساء

تليفون ٥٨٧٤٦٦٤ / ٥٨٦٦٦٧٢ / ٠٣

ص.ب. ٢٠٢٢ الأحساء ٣١٩٨٢

### مكتب توعية الجاليات بالخبر

تليفون ٨٩٨٧٤٤٤ / ٣٠ الدمام ٣١١٣١

### المؤسسة الخيرية للدعوة بحددة

تليفون ٦٣١٧٥٤ / ٦٧٣٠٤٣١ / ٠٢

فاكس ٦٧٣١١٤٧

ص.ب. ١٥٧٩٨ جدة ٢١٤٥٤

### مكتب توعية الجاليات بحائل

تليفون ٥٣٣٤٧٤٨ / ٥٤٣٢٢١١ فاكس ٠٦

ص.ب. ٢٨٤٣

### المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد بالحوطة

تليفون ٠١ / ٥٥٥٠٥٩٠

حوطة بني تميم ص.ب. ٢٠٧

## أهداف المكتب :

- ١ - التعاون مع الجهات الرسمية العاملة في مجال الدعوة لنشر العلم الشرعي وتبصير المسلمين بأمور دينهم.
- ٢ - دعوة غير المسلمين إلى الإسلام.
- ٣ - تعليم حديثي الإسلام أصول الدين.

طباعة الكتاب النافع والشريط المفيد من أقوى وسائل الدعوة إلى الله. فبادر أخي إلى الاشتراك في توفيرها لمن هو بحاجة إليها.

مع نحيات المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد  
وتوعية الجاليات في النسيم  
شركة الراجحي المصرفية للاستثمار  
فرع أسواق الربوة  
رقم الحساب - ٣٩٠٠



المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد وتوعية الجاليات في النسيم  
الرياض - حي المنار / مقابل العيادات الخارجية لمستشفى الإمام  
تحت إشراف وزارة الشؤون الإسلامية والأوقاف والدعوة والإرشاد  
هاتف وفاكس ٢٣٢٨٢٢٦ - ٠١ - ص ب ٥١٥٨٤ الرياض ١١٥٥٣